AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के सुकमा जिले में निवासरत मुरिया जनजाति के द्वारा किये जाने वाले कृषि पद्धति की परंपरागत ज्ञान का विश्लेषण

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. सुनीता सोड़ी
रिसर्च एसोसिएट
साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

सुकमा जिले की मुरिया जनजाति कृषि कार्य में विभिन्न फसलों की खेती करते हैं जैसेः धान, मक्का, कोदो, कुटकी, रागी, बाजरा, ज्वार, मुंग, बरबट्टी, कुलथी, उड़द, तिलहन, सूरजमुखी और विभिन्न सब्जियाँ है। पूर्व में यह जनजाति स्थानांतरित कृषि करते थे और वे लंबे समय तक परंपरागत कृषि में भी संलग्न रहे जो कि जीवन निर्वाह तक ही सीमित रही जिससे इनकी अर्थव्यवस्था निम्न स्तर पर थी। आधुनिक समाजों से दूरी और शिक्षा का अभाव होने के कारण वे लंबे समय तक परंपरागत कृषि से जुड़े रहे है। वर्तमान में इन्होंने शिक्षा ग्रहण किया और आधुनिक समाजों से जुड़े इस तरह इनके जीवन में धीमी गति से बदलाव आया जिससे आज यह अपने पारंपरिक ज्ञान के साथ ही आधुनिक यंत्रो का प्रयोग कर अपनी अर्थव्यवस्था में काफी सुधार किए हैं। राज्य शासन की योजनाओं तथा नए यंत्रो से कृषि क्षेत्र में लाभ अर्जित कर रहें हैं जिससे इनके फसलों की उपजता अच्छी हो रही है। मुरिया जनजाति अपने कृषि कार्य में धार्मिक अनुष्ठानिक क्रियाओं को करते हैं। यह जनजाति कृषि क्षेत्र में उन्नति और समस्याओं से बचाव के लिए देवी–देवताओं की सेवा कर उन्हें प्रसन्न करने में विश्वास रखते हैं। यह पारंपरिक ज्ञान जिनका लिखित अभाव है जिसे मौखिक रूप से आगे बढ़ाया जाता है। मुरिया जनजाति में कृषि पद्धति का पारंपरिक ज्ञान जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है वह ज्ञान कृषि कार्य हेतु आज भी प्रचलन में है।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़, बस्तर, सुकमा, मुरिया जनजाति, कृषि पद्धति, परंपरागत ज्ञान.

प्रस्तावना

जनजाति समूह वनों, पहाड़ों के किनारे निवास करना पसंद करती है। यह अपनी आजीविका की पूर्ति वनों से ही प्राप्त करते हैं और वे अपने देवी–देवताओं एवं कुलदेवता पर अधिक विश्वास करते हैं।[1] 2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 104 मिलियन है जो देश की अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है। छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजाति कुल जनसंख्या का 30.62 प्रतिशत है।[2]

जनजातियों के मध्य कृषि कार्य से संबंधित प्रथाएं यह समुदाय के मध्य विकसित एक प्रकार का पारंपरिक ज्ञान है। यह देशज ज्ञान जो कि परिस्थितियों के माध्यम से उत्पन्न और रूपांतरित होता है।[3] कृषि कार्य जनजातियों का प्राचीन व्यवसाय है। जनजातीय समूहों ने स्थानांतरित खेती करने के तरीके को स्थाई कृषि में बदल दिया है, किंतु आज भी कृषकों के मध्य इनकी प्रथाएं पारंपरिक रूप से विद्यमान है।[4] यह पारंपरिक ज्ञान जनजाति समाजों की जीवन शैली है, जिसमें प्राकृतिक और

भौतिक वातावरण के भीतर सांस्कृतिक अनुकूलन व धार्मिक विश्वासों का एक घनिष्ठ संपर्क बनाए रखता है। इसे अब पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है।[5] कृषि ज्ञान और पारंपरिक प्रथाओं को संरक्षण करने की आवश्यकता है। क्योंकि यह खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने, प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने तथा जैव विविधता को बनाए रखने में सहायक होती है।[6] जनजातीय कृषक अपनी आजीविका की पूर्ति कृषि व लघु वन उत्पादन से करते हैं। यह कृषक आज भी कृषि भूमि की जुताई करने से लेकर कटाई तक परंपरागत पद्धति को अपनाते हैं। कृषि क्षेत्र में इनका अपना पारंपरिक ज्ञान व अनुभव है।[7]

मुरिया जनजाति छत्तीसगढ़ की बस्तर संभाग के समस्त जिलों में विस्तृत है। इनकी मातृ बोली गोंडी है। इनकी अर्थव्यवस्था खाद्य संकलन, शिकार एवं कृषि है।[8] मॉर्गन के अनुसार (1877)[9] जनजाति कबीलों का एक संगठन है समुदाय का एक अलग नाम, एक भाषा, पृथक राजनीतिक संगठन तथा एक क्षेत्र में रहने वाले लोगों का स्वयं का अधिकार होता है। देश में लागू कानूनों की तुलना में जनजाति लोग अपने जीवन को सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक संस्थाओं के संदर्भ में अधिक नियंत्रित करते हैं।[10]

उद्देश्य

मुरिया जनजाति द्वारा अपनाये जाने वाले कृषि पद्धति के पारंपरिक ज्ञान का अध्ययन करना तथा कृषि पद्धति में आयोजित किये जाने वाले त्यौहार और पूजा की मान्यताओं के महत्व का विश्लेषण करना है। कृषि पद्धति में हुए परिवर्तनों की वर्तमान स्थिति को समझना है।

शोध प्रविधि

यह शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर संभाग के सुकमा जिले की मुरिया जनजाति के द्वारा किये जाने वाले कृषि पद्धति का अध्ययन किया गया है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली से 30 कुंजी सूचनादाता का चयन किये गए हैं। कृषि पद्धति के पारंपरिक ज्ञान की जानकारी रखने वाले महिलाएँ, पुरूषों एवं बुजूर्गों से कृषि पद्धति से संबंधित तथ्यों की जानकारी एकत्रित की गई है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु अर्द्धसहभागी अवलोकन, साक्षात्कार–निर्देशिका, अनुसूची प्रविधियाँ है तथा द्वितीयक तथ्यों का संकलन हेतु इंटरनेट, शोध पत्र एवं पुस्तकें है। इस अध्ययन का विश्लेषण गुणात्मक विधि से किया गया है।

परिणाम और चर्चा

कृषि पद्धति के चरण – कृषि क्षेत्र में मुरिया जनजाति के पारंपरिक ज्ञान कृषि कार्य के प्रत्येक चरण में निम्नानुसार है जैसेः

- **साफ–सफाईः** खेतों में फसल बुवाई के पूर्व कृषि भूमि की साफ–सफाई की जाती है। खेतों में उगे गए घास व अनावश्यक पौधों को काटकर कृषि भूमि में ही सुखाया जाता है। सूखने के पश्चात् वह पौधें वर्षा के पानी से सड़गलकर खाद बनती है, जिससे वह मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ती है, जिस कारण फसल अधिक उपजाऊ होती है।
- **खाद छिड़कावः** खेतों में खाद छिड़काव हेतु बकरी, गाय व भैंस गोबर की खाद का प्रयोग किया जाता है। मिंजाई के बाद धान के सूखे पुआल (पैरा) को खेतों में फैला दिया जाता है जो वर्षा के पानी से सड़कर खाद बन जाती है। इन खादों से मिट्टी में केचुएं पैदा होती है जिससे मिट्टी की उवर्राशक्ति बढ़ती है।
- **जुताईः** इनमें खेतों की जुताई हल से किया जाता है। हल जिसे गोंडी में ''नांगल'' कहा जाता है। कृषक हल चलाते समय ''इर्रा तित्ति व उर्रा तित्ति'' शब्द का प्रयोग करते हैं जो कि गोंडी शब्द है ''इर्रा'' जिसका अर्थ बैलों को दाएँ की ओर मुड़ने के लिए और ''तित्ति'' का अर्थ बाँए की ओर मुड़ने के लिए कहा जाता है। हल को दो बैलों से बाँधकर खेतों में दाँए से बाँए की ओर घुमाया जाता है तथा किनारे की ओर से जुताई करते हुए मध्य में समाप्त करते हैं।
- **बुवाईः** जुताई करने के पश्चात् खेतों में धान के बीजों को बोया जाता है। बीजों को दो या तीन दिनों तक सुतली बोरे में या कपड़े में भिगोकर अंकुरित कर खेतों में बुवाई की जाती है। काष्ठ और वस्त्र से काकभगोड़ा या पुतला बनाया जाता है, जिसे गोंडी में 'पुतरम' कहते हैं। उस पुतले को खेतों के बीचों–बीच में डंडे की सहायता से खड़ा कर दिया जाता है ऐसा प्रतीत होता है मानों वहां कोई व्यक्ति खड़ा हुआ है। इनमें पुतला खड़ा करने की मान्यता प्रमुख है जैसे, पशु–पक्षियों से फसलों की सुरक्षा करना और फसलों को किसी की नजर ना लगे इत्यादि है।
- **निंदाईः** बियास देना जिसे गोंडी में ''मोट् पुड़तोर'' कहा जाता है। जब खेतों में धान बड़ी हो जाती है तब बैल के गले से मोटे लकड़ी को बांधकर खेतों में घुमाया जाता है। ऐसा करने पर घास मिट्टी में दबकर सड़ जाती है जिससे फसल की वृद्धि अच्छी होती है। दूसरे प्रकार से खरपतवार को हाथ से उखाड़ कर सफाई की जाती है, जिसमें समय व श्रम अधिक लगता है।

- **सिंचाई**: यह जनजाति खेतों में सिंचाई के लिए वर्षा के पानी पर निर्भर रहते हैं। मेढ़ों की सहायता से वर्षा से एकत्रित पानी को खेतों में बाँधकर रखा जाता है और जब बीज पकने वाली होती है तब उस पानी को छोड़ दिया जाता है।
- **कीटों से बचाव**: फसल को नष्ट कर रहे कीटों को दूर करने के लिए खेतों में उगाये गये फसलों के मध्य भाग में विभिन्न जगहों पर करिया झाटी की छोटी शाखाओं को भूमि में गड़ाया जाता है, जिस कारण वहां का पानी काला पड़ता है और उस पानी से गंध आने लगती है जिससे कीड़े व कीट फसलों से दूर होती है। कीटों से बचाव के लिए सब्जियों में राख का छिड़काव किया जाता है।
- **कटाई**: इनमें फसलों की कटाई पारंपरिक हँसिया से किया जाता है। धान की कटाई परिवार के लोग सामूहिक रूप से मिलकर करते हैं। हँसिया से काटने पर अधिक फसल एकत्रित होते हैं, यह मान्यता है।
- **मिंजाई**: खेत में या घर में धान की मिंजाई के लिए खलिहान (कोठार) बनाया जाता है। खलिहान (कोठार) में धान बारह को एकत्रित करते हैं। पूर्व में हाथ व पैरों से धान की मिंजाई कर बीज निकाला जाता था। इसके पश्चात् बैलों के उपयोग से बीज निकाला गया, जो कि आज भी प्रचलन में है।
- **बीज संग्रहण**: बांस की बनी एक बड़ी टोकरी की वस्तु जिसे गोंडी में ''कुस्सा'' या ''गुम्फा'' कहा जाता है। इस टोकरी के भीतर सागौन के पत्ते को रखकर बाहर की ओर से गोबर का लेप लगाया जाता है। लेप लगाने से चूहे, कीड़े तथा हवा टोकरी के अंदर प्रवेश नहीं करती है और वह बीज लंबे समय तक सुरक्षित रहती है। दलहन बीजों की सुरक्षित संग्रहण के लिए ''ढेढा'' पात्र बनाया जाता है, जो कि सिहाड़ी पत्ते से निर्मित एक छोटी टोकरी है जिसके अंदर दलहन वाले बीजों को रखा जाता है और उन बीजों में संतरा, नींबू या राख को मिलाकर ''ढेढा'' अच्छे से बाँधा जाता है। इस तरह करने पर सुरई व कीड़े नहीं लगते हैं और वह बीज अधिकतम पांच से छः साल तक सुरक्षित रहती है।

कृषि कार्य में किये जाने वाले पूजा पद्धति

मुरियाजन कृषि कार्य के प्रत्येक चरण में खेतों की सुरक्षा व फसलों की उत्पादन हेतु त्यौहार का आयोजन करते हैं और समय–समय पर पूजा भी किया जाता है। कृषक अपना कार्य देवी–देवताओं के आस्था से प्रारंभ करता है, जो कि धार्मिक विश्वास पर आधारित है। इस प्रकार से वे कृषि कार्य में धार्मिक अनुष्ठानिक क्रियाओं से जुड़े हुए हैं।

- **विज्जा पंडुम (माटी त्यौहार या बीज त्यौहार)**: बीज त्यौहार को गोंडी बोली में ''विज्जा पंडुम'' कहा जाता है तथा ''पंडुम'' अर्थात ''त्यौहार'' है। इस त्यौहार का आयोजन खेतों में जुताई प्रारंभ करने के पूर्व किया जाता है। कृषि भूमि में हल चलाने से पहले माटी देव अर्थात् धरती माता को इस त्यौहार में अपनी धार्मिक अनुष्ठानिक क्रियाओं से पूजा कर देवी मां से अनुमति लेकर उन्हें प्रसन्न किया जाता है, जिससे उस वर्ष फसल का उत्पादन अच्छी हो सके।
- **कड़ीय पंडुम (हरियाली त्यौहार)**: इस त्यौहार में फसल में होने वाली रोग और कीटों को दूर कर फसल को सुरक्षित रखने हेतु धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। गांव में निवासरत प्रत्येक परिवार के पुरूष सदस्य अपने खेत से कीटों को पकड़कर पूजा वाले स्थान पर लेकर जाते हैं, और वहां पर पेड़मा विशेषज्ञ अपने तंत्र–मंत्र से कीटों को गांव से दूर करता है। इसमें भीमा देव की पूजा की जाती है, इसकी पूजा वर्षा के लिए महत्वपूर्ण है। अच्छी वर्षा होने पर फसल की हरियाली बनी रहे और गांव के सभी परिवार में फसल की उन्नति हो, ऐसी मान्यता है।

  फसल कटाई करने के पहले पुजारी द्वारा खेत की पूजा कर अण्डा और चावल का चढ़ावा चढ़ाया जाता है। खेत में महामण्डल सर्प रहता है जिसे खेत का रखवाला माना जाता है, इस सर्प को प्रसन्न करने हेतु चावल और अण्डा देकर पूजा करने की मान्यता है, जिससे परिवार के लोग जब धान कटाई करते हैं तब वह सर्प उन्हें काट न पाये तथा वे लोग सुरक्षित रहें।
- **काड़ पोइतनद–विड़सनद (कोठार बाँधना और छोड़ना)**: धान के बारह को खलिहान (कोठार) में रखने के पूर्व खलिहान की साफ–सफाई कर गोबर से लिपाई किया जाता है। खलिहान के मध्य में एक महुए का खूँटा गड़ाया जाता है, तथा उस खूँटे में पुजारी तंत्र–मंत्र से पूजा कर खलिहान का घेराव करके उसे पवित्रता के बंधन में बाँधता है, पूजा के समय इसमें भी अण्डा और चावल का चढ़ावा चढ़ाया जाता है। पूजा के बाद उस कोठार के भीतर घर की किशोरी युवतियाँ व दूसरे गोत्र की स्त्रियां प्रवेश नहीं करती है। घेराव के भीतर धान बारह को रखा जाता है। खलिहान को बंधन में बांधने की यह मान्यता है जैसे कि बुरी शक्ति का प्रवेश ना हो, बीजों की चोरी ना हो और बीजों की सुरक्षा के लिए यह पूजा किया जाता है। फसल भंडारण के पश्चात् खलिहान को छोड़ते समय भी अण्डा और चावल की सामग्री देकर उस बंधन को तोड़ा जाता है इसके पश्चात् घर की किशोरी युवतियां और दूसरे गोत्र की स्त्रियां उस खलिहान में जा सकती है।

- **भीमूड़ पंडुम (गादे त्यौहार)**: इस त्यौहार के अवसर पर वर्षभर में उत्पादन किये गए समस्त फसलों के बीजों को देवी–देवताओं के समक्ष अर्पित करते हैं। फसलों को अर्पित करने की मान्यता यह है कि इस वर्ष सभी फसल का उत्पादन बहुत ही अच्छा रहा कहकर देवी देवताओं के समक्ष बीजों का अर्पण कर उन्हें धन्यवाद ज्ञापित कर प्रसन्न किया जाता है।

नए तकनीकों के प्रयोग से कृषि पद्धति में परिवर्तन

इस आधुनिकीकरण युग में कृषि कार्य में उपयोगी परंपरागत तकनीकों के स्थान में नए तकनीकों ने ले लिया है। यह जनजाति के लोग खेतों की जुताई के लिए हल उपकरण का प्रयोग करते थे किंतु अब ट्रैक्टर का प्रयोग करने से अधिक से अधिक लोग कृषि भूमि और बंजर भूमि की भी जुताई करते हैं। पूर्व में धान की बुवाई खेतों में की जाती थी किंतु अब धान रोपण किया जाता है। कुछ कृषक धान रोपण के लिए पैडी ट्रांसप्लांटर यंत्र का भी प्रयोग करने लगे हैं। रोपण करने पर धान बीज की वृद्धि होती है। फसलों की वृद्धि के लिए गोबर खाद का प्रयोग किया जाता था जो कि अब कम हो चूका है। कुछ कृषक अपने खेतों में रासायनिक खाद्य पदार्थ का प्रयोग करते हैं। खरपतवार नाशक दवाई का भी छिड़काव किया जाता है, किन्तु वही कृषक इसका प्रयोग करते हैं जिसे इसकी जानकारी है। धान मिंजाई करने के लिए सर्वाधिक लोग अब थ्रेसर यंत्र का प्रयोग करते हैं। इस यंत्र के प्रयोग करने से समय व श्रम की बचत होती है। आधुनिक तकनीकी यंत्र का प्रयोग करने से श्रम व समय की बचत होती है।

निष्कर्ष

सुकमा जिले में निवासरत मुरिया जनजाति सर्वाधिक धान की खेती करते हैं इसके अतिरिक्त मक्का, कोदो, कुटकी, रागी, दलहन, तिलहन या अन्य सब्जियों का उत्पादन किया जाता है। अधिकांश जनजाति आज भी अपने पारंपरिक ज्ञान का उपयोग कृषि कार्य के प्रारंभिक चरण से लेकर अंतिम चरण तक करते हैं। इनका पांरपरिक ज्ञान जो कि मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में काफी कारगर साबित हुई है। इस प्रौद्योगीकरण के दौर में वह अपने पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित रखने में पिछड़ते जा रहे हैं। इनके कृषि कार्य जो कि धार्मिक अनुष्ठानिक क्रियाओं से जुड़े हुए हैं। फसलों के उत्पादन में इनका देवी–देवताओं पर अटूट विश्वास होता है इस कारण से यह फसलों की वृद्धि हेतु कृषि कार्य के प्रत्येक चरण में त्यौहारों व पूजा के माध्यम से देवताओं व पूर्वजों की सेवा करते हैं। ऐसे कृषक जो जिला मुख्यालय के समीप गांवों में निवास करते हैं वे आज सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर नए तकनीकों का प्रयोग करते हैं, जबकि ऐसे मुरिया परिवार जो अंदरूनी क्षेत्र में निवास करते हैं वे आज भी परंपरागत खेती करते हैं जो कि उनके जीवन निर्वाह तक ही सीमित है।

संदर्भ सूची

1. Doshi, S.L. & Jain, P.C. (2001) *Social Anthropology.* Rawat Publication, Jaipur. p. 360-361
2. Census of India, (2011) *Office of the Registrar General and Commissioner India (ORGI)* Provisional Population Chhattisgarh, Government of Chhattisgarh, Raipur.
3. Brouwers, J.H.A.M. (1993) *Rural Peoples Response to Soil Fertility Decline, The Adja Case (Benin)* Wageningen Agricultural University, Netherlands, p. 93-94.
4. Ghosh, P.K.; Sahoo, C. & Rath, S. (2010) Traditional Agricultural Wisdom for Sustainability in Tribals Areas. *Orissa Review,* LXXIV (2), 55-56.
5. Chattoraj, K.K. & Chand, S. (2015) Variation in Agricultural Practices between Tribal and Non-Tribal Population in Jangal Mahal Blocks of Bankura District A Case Study of Sarenga and Simlapal Blocks. *IOSR Journal of Agriculture and Veterinary Science (IOSR-JAVS),* 8(7), I, 79-80, www.iosrjournals.org
6. Syarief, R. Sumardjo; Kriswantriyono, A.; Wulandari, Y.P. (2017) Food Security Through Community Empowerment in Conflict Prone Area Timika Papua. *JILMU Pertanain Indonesia,* 22(3), 169
7. Kurmi, A. & Thomas, M. (2022) Traditional Knowledge –Based Agricultural Practices in Tribal Dominated District Anuppur Madhya Pradesh. *Plant Science Today,* x(x), xx-xx, 52, https://doi.org/10.14719/pst.1882
8. Behar, R. (1995) *Bastar ek Adhyayan.* Madhya Pradesh, Hindi Granth Academy, Bhopal.
9. Morgan, L.H. (1877) *Ancient Society.* Charles H. Kerr and Company, Chicago.
10. Xaxa, V. (1999) Tribes and Indigenous People of India. *Economic and Political Weekly,* 34(51), 3589.

––==00==––